रॉबर्ट वानॉय , ड्यूटेरोनॉमी, व्याख्यान 9

© 2011, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स और टेड हिल्डेब्रांट

"3" था "ऐतिहासिक प्रस्तावना का अभाव।" "4" था "बुनियादी शर्त का अभाव।" याद रखें हित्ती रूप में मूल शर्त वफादारी का मौलिक दायित्व है। यह प्रस्तावना के तुरंत बाद आता है। राजा कहता है, "मैंने यह किया है, और इसलिए, तुम्हें मुझ अधिपति की सेवा करनी चाहिए।" असीरियन संधियों में बुनियादी शर्तें नहीं हैं, इसलिए यह दूसरा संरचनात्मक अंतर है। जागीरदार द्वारा मुख्य साझेदार के प्रति निष्ठा की घोषणा हित्ती संधियों में ऐतिहासिक प्रस्तावना का बारीकी से अनुसरण करती है। अब, निःसंदेह, आपके पास असीरियन संधियों में कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं है, और इसलिए यह इस प्रकार है कि आपके पास वह बुनियादी शर्त नहीं है। तो इसके बजाय, असीरियन संधियों में निष्ठा की शपथ होती है। लेकिन आपने देखा कि यह बिल्कुल अलग संदर्भ में है। देखो इसमें क्या शामिल है। यह शापों के बाद आता है, और इसके बाद और भी शाप आते हैं। इसलिए शपथ विश्वास और वफादारी के बजाय डर के संदर्भ में ली जाती है। हित्ती संधियों में आपके पास ऐतिहासिक प्रस्तावना है जिसके बाद वह बुनियादी शर्त है जो है "मैंने आपके लिए यह किया है; मैंने आपके लिए यह किया है।" अब, जो कुछ मैं ने तुम्हारे लिये किया है, उसके आधार पर मेरी सेवा करो और मेरे प्रति वफ़ादार रहो।" इसलिए यह फिर से दोनों पक्षों के बीच संबंधों की गुणवत्ता में अंतर पर जोर देता है। ठीक है, ये चार हैं, "बुनियादी शर्त का अभाव।"

पाँचवाँ है, "आशीर्वाद का अभाव।" असीरियन संधियों के कठोर स्वर को ध्यान में रखते हुए एक और संरचनात्मक अंतर है। संधि शर्तों का पालन करने के लिए कोई आशीर्वाद नहीं गिनाया गया है। हित्ती संधियों में शाप और आशीर्वाद हैं; असीरियन संधियों में केवल अभिशाप हैं और कोई आशीर्वाद नहीं। आशीर्वाद हित्ती संधियों में स्थायी स्थिरताओं में से एक है। इसलिए मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि जब आप संधियों के दो समूहों की तुलना करते हैं तो इसकी अनुपस्थिति फिर से एक महत्वपूर्ण अंतर है: न केवल संरचना के दृष्टिकोण से, बल्कि स्थापित हो रहे रिश्ते के दृष्टिकोण से भी।

श्राप और आशीर्वाद के लिए, यदि आप निर्गमन 20 को देखते हैं, तो डिकालॉग, दस आज्ञाओं में आशीर्वाद और श्राप का केवल एक संकेत है। अपने माता-पिता का आदर करने के

आदेश में आपको आशीर्वाद का संकेत मिलता है। "अपने पिता और माता का आदर करो ताकि तुम भूमि पर दीर्घकाल तक जीवित रह सको।" यह इसके अनुरूप होगा: यदि आप ऐसा करते हैं तो आप धन्य होंगे । आपको शाप का संकेत मिलता है "तू प्रभु का नाम व्यर्थ न लेना; प्रभु उसे निर्दोष नहीं ठहराएगा जो उसका नाम व्यर्थ लेता है। लेकिन आशीर्वाद और अभिशाप के तत्वों पर अच्छी तरह से काम नहीं किया गया है। यह हर एक आज्ञा के साथ नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि शाप और आशीर्वाद का तत्व दस आज्ञाओं में है। व्यवस्थाविवरण में यह निश्चित रूप से अधिक स्पष्ट है।

ठीक है, वह संख्या "5" थी। "6" का अर्थ है "असीरियन संधियों की शर्तें एक तरफा हैं।" असीरियन संधियों की शर्तों का उद्देश्य केवल छोटे साझेदार या जागीरदार की ओर था। दूसरे शब्दों में, छोटे साझेदार का दायित्व महान राजा के प्रति होता है। जागीरदार को प्रदान करने और उसकी रक्षा करने के राजा के दायित्व की पारस्परिक जिम्मेदारी का कोई संकेत नहीं है। यह कुछ ऐसा है जो हित्ती संधियों में आम बात है। दूसरे शब्दों में, हित्ती संधियों में, न केवल महान राजा कह रहा है, "देखो, मैं चाहता हूं कि तुम यह करो, यह करो और यह करो," वह स्वयं को जागीरदार के लिए कुछ चीजें करने के लिए भी बाध्य करता है। तो वहाँ एक पारस्परिक संबंध है जो असीरियन शर्तों की एकतरफा प्रकृति में अनुपस्थित है।

7. "असीरियन संधियाँ पूरी तरह से उत्तराधिकार संधियाँ हैं।" असीरियन संधियों की विषय वस्तु हित्ती से काफी भिन्न है। असीरियन संधि में सभी चीजें एक विशेष मुद्दे पर निर्देशित हैं, और वह उत्तराधिकार का मुद्दा है, उत्तराधिकार: एसरहद्दोन के राजा अशर्बनिपाल का। इसलिए जब आप इसकी तुलना हित्ती संधियों से करते हैं, तो हित्ती संधियाँ भागीदारों के बीच संबंधों के केवल एक पहलू तक ही सीमित नहीं थीं। वे समझौते के दोनों पक्षों के लिए महत्वपूर्ण विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करते हैं।

तो "8" है, "निष्कर्ष।" मुझे ऐसा लगता है कि इन विचारों के आधार पर हम कह सकते हैं कि असीरिया और एसरहद्दोन और हित्तियों की संधियों के बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं। असीरियन संधियों में संरचनात्मक पैटर्न अलग है, और उसके साथ एक अलग भावना जुड़ी हुई है। इसलिए यह रिश्ता, आपसी समर्थन का होने के बजाय, असीरियन राजा द्वारा जागीरदार पर रखी गई कठोर मांग और धमकियों में से एक है।

अब, इस प्रकार के विचारों के आधार पर, मुझे ऐसा लगता है कि मेरेडिथ क्लाइन के पास यह कहने का उचित आधार है कि असीरियन संधियाँ पहले की हित्ती संधियों से भिन्न हैं। उस अवधि में संधियों के रूप में एक विकास या परिवर्तन होता है। उनके पास यह निष्कर्ष निकालने का पर्याप्त कारण है। अब, दिलचस्प बात यह है कि मेंडेनहॉल, जिन्होंने 1954 में वह लेख लिखा था, जिसमें संधि और अनुबंध सामग्री पर ध्यान आकर्षित किया गया था, साथ ही डब्ल्यूएफ अलब्राइट और जॉन ब्राइट, अन्य लोग भी इस पर क्लाइन से सहमत हैं। मेंडेनहॉल, अपने मूल लेख "कानून और अनुबंध" में कहते हैं, "यह अनुबंध प्रकार इज़राइली परंपराओं के अध्ययन के शुरुआती बिंदु के रूप में और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह साबित नहीं किया जा सकता है कि यह महान साम्राज्यों के पतन से बच गया है।" दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में जब साम्राज्य फिर से उभरे, विशेष रूप से असीरिया, तो जिस वाचा से उन्होंने अपने जागीरदारों को बांधा, उसकी संरचना पूरी तरह से अलग थी। वह मेंडेनहॉल का कथन था। उन्होंने कहा कि आप यह साबित नहीं कर सकते कि मूल हित्ती संधियाँ असीरियन संधियों में अगली सहस्राब्दी तक जीवित रहीं। यह बिल्कुल अलग संरचना थी. वह आगे कहते हैं, “अन्य सभी सामग्रियों में हमारे पास ऐतिहासिक प्रस्तावना गायब है जो कि असीरियन संधियों के साथ है। और केवल असीरियन देवताओं को गवाहों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। संपूर्ण पैटर्न भी मौलिक रूप से भिन्न है। निःसंदेह, यह संभव है कि यह स्वरूप अन्यत्र भी जीवित रहा हो। लेकिन लेखक को इसका कोई प्रमाण नहीं मिल पाया है। हमें यह भी उम्मीद करनी चाहिए कि अगर यह जीवित भी रहा, तो कमोबेश इसके स्वरूप में दूरगामी परिवर्तन होंगे।”

पाषाण युग से ईसाई धर्म में अलब्राइट मेंडेनहॉल से सहमत हैं और कहते हैं, "आधा दर्जन असीरियन संधियों की संरचना, जो फोनीशियन संधियों में पाई जाती हैं, जिन्हें हम आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व और उसके बाद से जानते हैं, काफी अलग हैं।" यह जॉन ब्राइट के *इज़राइल के इतिहास के समान है*।

तो यह मेरे लिए पहेली है, उन विचारों को देखते हुए, डीजे वाइसमैन और मैक्कार्थी क्यों कहते हैं कि फॉर्म मूलतः एक ही था। लेकिन वाइसमैन, जिन्होंने असीरियन संधियों को प्रकाशित किया, और मैक्कार्थी दोनों का तर्क है कि रूप मूलतः एक ही है। डीजे वाइसमैन ने संधियों के अपने प्रकाशन में इस पर टिप्पणियों में कहा है, "संधियों का स्वरूप हित्ती साम्राज्य के समय तक पहले से

ही मानकीकृत था, और यह पाठ [जो कि एसरहद्दोन की जागीरदार संधि है] दिखाता है कि यह मूल रूप से अपरिवर्तित रहा नव-असीरियन काल के माध्यम से।" वह मानकीकृत हित्ती रूप की बात करते हुए कहता है कि यह असीरियन काल के दौरान अपरिवर्तित है। तब मैक्कार्थी इसे उठाते हैं, वाइसमैन का समर्थन करते हैं और कहते हैं, "ऐसा कहा जाता है कि पहली सहस्राब्दी की असीरियन और अन्य संधियाँ दूसरी सहस्राब्दी के हित्ती रूप से संरचना में तुलनात्मक रूप से भिन्न हैं। मुझे ऐसा लगता है कि अभी पूरा किया गया विश्लेषण इसे स्पष्ट करने में विफल रहा है।" और फिर अभी हाल ही में, मोशे वेनफील्ड ने अपनी पुस्तक *ड्यूटेरोनॉमी एंड द ड्यूटेरोनोमिक स्कूल*, 1972 में कहा है, "हित्ती संधियों के निर्माण को अद्वितीय मानने का कोई औचित्य नहीं है। न ही मेंडेनहॉल की इस धारणा का कोई आधार है कि केवल हित्ती संधियाँ ही बाइबिल की वाचा के मॉडल और आदर्श के रूप में कार्य करती हैं। अब आप अपने निष्कर्ष निकाल सकते हैं, लेकिन आपके पास डीजे वाइसमैन, मैक्कार्थी और वेनफील्ड हैं , जो कह रहे हैं कि असीरियन और हित्ती संधियों के बीच मूल रूप से कोई अंतर नहीं है। जबकि आपके पास क्लाइन, अलब्राइट, ब्राइट, मेंडेनहॉल और अन्य लोग कह रहे हैं कि हित्ती रूप और असीरियन रूप के बीच एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। अब कुछ ऐसे तत्व हैं जो समान हैं, आपके पास शर्तें हैं, आपके पास श्राप हैं, आपके पास गवाह हैं। सच है, आपमें कुछ समानताएँ हैं, लेकिन समानताओं के बीच में मेरी बात है, और मुझे लगता है कि मेंडेनहॉल का कहना है कि कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं जो इतने महत्वपूर्ण हैं कि कोई यह नहीं कह सकता कि फॉर्म में कोई संशोधन नहीं है।

इस प्रकार की संधि असीरियन सैन्य तकनीकों और रणनीतियों के लिए उपयुक्त है, जिनके बारे में हम जानते हैं कि वे बहुत हिंसक और क्रूर थीं। उन्होंने आतंक के बल पर खुद को अन्य लोगों पर थोपा और असीरियन संधि का रूप इसके साथ फिट बैठता है।

लेकिन वेनफील्ड और मैक्कार्थी सहित कई अन्य लोगों का तर्क है कि संधि वाचा है और इसका रूप बाइबिल की सामग्रियों में पाया जाता है, लेकिन इसे अश्शूरियों से देर से, लगभग 600 या 700 ईसा पूर्व में लिया गया था, जो लगभग 600 या 700 ईसा पूर्व में लिया गया था। मोज़ेक उत्पत्ति के ऐतिहासिक निहितार्थ। हम यह नहीं कह सकते कि इस्राएलियों को अश्शूरियों से संधि

पत्र मिला; यह हित्ती संधियों के समान रूप में फिट नहीं बैठता है। इसीलिए यह बिंदु क्लाइन के तर्क के लिए इतना महत्वपूर्ण है, लेकिन मैं उस पर वापस आता हूँ।

आइए डी पर चलते हैं: " सेफ़ायर की अरामी संधियों की तुलना एसरहद्दोन की जागीरदार संधियों और हित्ती आधिपत्य संधियों से की गई है।" सबसे पहले, कुछ परिचयात्मक टिप्पणियाँ: अरामी संधियाँ थीं जिन्हें सेफ़ायर संधियाँ कहा जाता था। इनका काल आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व का है, ये असीरियन संधियों से थोड़ा पहले के हैं। असीरियन संधियाँ 672 ईसा पूर्व हुई थीं; सेफ़ायर संधियाँ आठवीं शताब्दी में, 700 ईसा पूर्व में हुई थीं, उन्हें आम तौर पर केवल " सेफ़ायर एक," "दो" और "तीन" के रूप में संदर्भित किया जाता है, क्योंकि तीन संधि ग्रंथ हैं। सेफ़ायर रोमन अंक I, II, और III। और ये लगभग 60 साल पहले सीरिया नाम की जगह सेफ़ायर में पाए गए थे. लेकिन ऐसा 1958 तक नहीं हुआ था कि वे प्रकाशित हुए थे और उन पर कुछ अध्ययन किया गया था। उनमें से दो दमिश्क, सीरिया संग्रहालय में हैं, और दूसरा बेरुइट , लेबनान के एक संग्रहालय में है।

2. "फॉर्म का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण" - मैंने वहां फॉर्म की एक रूपरेखा रखी है। कई भागों पर ध्यान दें: शीर्षक; देवता जो साक्षी थे; शाप, अधिकारों के साथ; संधि का पवित्र चरित्र; शर्तें; भविष्य के लिए अनुस्मारक; आशीर्वाद का; श्राप.

अब वह रूप पहले सेफ़ायर पाठ, रोमन अंक I से लिया गया है, जो एक पूर्ण पाठ है। अन्य काफी खंडित हैं। लेकिन आपके पास अनुबंध करने वाली पार्टियों का परिचय देने वाला एक शीर्षक है। इसमें कहा गया है, " विर्गयाह की संधि [एक निश्चित स्थान पर] फ़रफ़ाद के राजा, अप्टर सोमास के पुत्र मैटियल के साथ [और इसी तरह]।" तो आपके पास संधि के दो साझेदारों का परिचय है। अब, यह विरगया की संधि है । उस व्यक्ति को उसके इस संदर्भ के अलावा नहीं जाना जाता है। कोई अन्य संदर्भ ज्ञात नहीं है. वह जिस भूमि का राजा था, उसकी भी निश्चित रूप से पहचान नहीं हो पाई है। जागीरदार मैटियल की पहचान अश्शूरियों की एक अन्य संधि में की गई है - अश्शूर के पांचवें शासक अशेर- मिरारी की संधि । मतिएल लगभग 754 ईसा पूर्व यूफ्रेट्स और भूमध्य सागर के बीच उत्तरी सीरिया का शासक है

मैं इन सभी अनुभागों में नहीं जा रहा हूँ, मुझे लगता है कि शीर्षक से आप बता सकते हैं कि यह किस प्रकार की सामग्री है। लेकिन अधिकारों के साथ श्रापों का एक खंड इस प्रकार होगा:

"जैसे यह मोम आग से जल जाता है, वैसे ही अर्पाद और उसकी बेटी के शहर भी जला दिए जाएंगे।" तो ऐसा लगता है जैसे वे मोम जलाकर अभिशाप का प्रदर्शन कर रहे थे।

दूसरा सेफ़ायर पाठ बहुत खंडित है। यह लगभग एक दर्जन टुकड़ों में पाया गया था, और जब टुकड़ों को एक साथ फिट किया गया, तो आपके पास विवरण के कुछ हिस्से थे जो इन ग्रंथों की संरचना के समान प्रतीत होते हैं। लेकिन अन्य संधियों की तुलना में इसका बहुत महत्व नहीं है।

तीसरा दस्तावेज़ फिर से खंडित है और इसमें केवल शर्तें हैं। यह तीसरे दस्तावेज़ में बचा एकमात्र अनुभाग है; वह प्रपत्र में अनुभाग संख्या 6 है। लेकिन इसमें इन तीनों ग्रंथों में से किसी एक की शर्तों का सबसे व्यापक संग्रह है। तो आपको शर्तों की व्यापक समझ प्राप्त होगी। वे षडयंत्रकारियों के आत्मसमर्पण, भगोड़ों के आत्मसमर्पण, मार्ग की स्वतंत्रता, सीमाओं को पार करने, हत्या के मामले में लिया जाने वाला प्रतिशोध, भगोड़ों की पारस्परिक वापसी और उस प्रकार की विभिन्न चीजों से संबंधित हैं। शर्तें, जहां तक संरक्षित हैं, एकतरफ़ा हैं। वे जागीरदार के आचरण को नियंत्रित करते हैं। वे एक अपवाद को छोड़कर पारस्परिक प्रकृति के नहीं हैं, और वह है भगोड़ों की वापसी। तो एक अपवाद है, लेकिन आम तौर पर वे एक तरफा होते हैं।

आइए तीन पर चलते हैं: " अश्शूर संधियों के लिए सेफ़ायर संधियों की समानताएँ।" यदि आप संरचना को देखें, तो आपको ऐतिहासिक प्रस्तावना के अभाव में दोनों के बीच समानता मिलेगी। असीरियन संधियों की कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं है, और सेफ़ायर संधियों की कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं है। तो उस अर्थ में, आप कह सकते हैं कि सेफ़ायर संधियाँ हित्ती संधियों की तुलना में असीरियन संधियों के अधिक निकट हैं। उनके पास न तो कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना है और न ही उनमें कोई बुनियादी शर्त है।

फिट्ज़मेयर कहते हैं, “एक तत्व विशेष रूप से अनुपस्थित है, ऐतिहासिक प्रस्तावना। अरामाइक संधियों में इस तत्व की अनुपस्थिति के लिए जो भी कारण बताया जा सकता है, इसकी अनुपस्थिति अरामाइक और हित्ती संधियों के बीच एक बड़ा अंतर है। यह तत्व वाचा की हित्ती अवधारणा का मूल है। यह हित्ती आधिपत्य संधियों का एक कानूनी ढांचा तैयार करता है। हित्ती अधिपतियों ने जागीरदार की सेवा के लिए दायित्वों को स्थापित करने के लिए अपने जागीरदारों के साथ-साथ अपने पूर्ववर्तियों के प्रति किए गए उपकारों को याद किया। वास्तव में, यह वही तत्व है

जो पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व की वाचाओं से अनुपस्थित है, चाहे वे अरामी हों या असीरियन।" वाइज़मैन द्वारा की गई टिप्पणियों के आलोक में यह योग्यता आवश्यक प्रतीत होती है, कि नव-असीरियन काल के दौरान अनुबंध का रूप मूल रूप से अपरिवर्तित रहता है। आप देख रहे हैं कि हम विवाद के उस बिंदु पर वापस आ गए हैं। फिट्ज़मेयर ने सेफ़ायर के अरामी शिलालेख प्रकाशित किए ; वह यह मात्रा है. हम पाठ और उस पर उनकी टिप्पणियाँ पढ़ सकते हैं।

दूसरा, न केवल ऐतिहासिक प्रस्तावना और वह बुनियादी शर्त गायब है, बल्कि शर्तें भी एकतरफा हैं। मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि भगोड़ों की वापसी को छोड़कर, वे एकतरफा हैं। यह फिर से हित्ती संधियों के विपरीत है। मैंने पहले इसका उल्लेख असीरियन संधियों के संबंध में किया था, जो कि एकतरफ़ा भी हैं। आप देखिए, हित्ती संधियों में अक्सर "संरक्षण खंड" कहा जाता है, जहां महान राजा जागीरदार की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध होता है। एफसी फ़ेंशाम कहते हैं, "हित्ती संधि में सबसे मानवीय शर्तों में से एक दुश्मनों के खिलाफ जागीरदार की सुरक्षा का वादा है। हो सकता है कि इस सुरक्षा का वादा मुख्य साझेदार के राज्य की सुरक्षा के लिए किया गया हो, लेकिन फिर भी यह जागीरदार के लिए सबसे उत्साहजनक अनुभव था। डरने के लिए कोई दुश्मन नहीं था. ऐसी परिस्थितियों में, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के समय छोटे राज्य समृद्ध हो सकते हैं। असीरियन संधियों या सेफ़ायर संधियों
में कोई सुरक्षा खंड नहीं था । एक और अंतर गवाह अनुभाग की नियुक्ति है। इन सेफायर संधियों में, परिचयात्मक पैराग्राफ, शीर्षक या प्रस्तावना के ठीक बाद देवताओं को गवाह के रूप में बुलाया जाता है। ध्यान दें कि हित्ती संधि में गवाह कहाँ हैं। यह पहले की बजाय शर्तों के बाद है। तो इस सेफ़ायर में हित्ती की तुलना में असीरियन रूप का अधिक बारीकी से अनुसरण किया जाता है। असीरियन रूप में प्रस्तावना या शीर्षक के ठीक बाद गवाह के रूप में देवता हैं। कुछ समानताएँ हैं, भले ही उन अंतरों को हमने अभी देखा है। ऐसी कुछ चीजें हैं जहां सेफ़ायर संधियाँ असीरियन संधियों की तुलना में हित्ती संधियों के अधिक करीब हैं, और आप देखते हैं कि इसमें सबसे पहले दोनों भागीदारों के देवताओं को गवाहों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। अरामी संधियों में महान राजा और जागीरदार दोनों के देवताओं का उल्लेख किया गया है। इसी तरह, हित्ती संधियों में दोनों साझेदारों के देवता गवाह होते हैं: महान राजा के देवता और साथ ही जागीरदार के देवता। लेकिन

असीरियन संधियों में केवल असीरियन देवताओं का नाम है। वे छोटे साझेदारों के देवताओं का नाम नहीं लेते। तो बिंदु पर, सेफ़ायर संधियाँ असीरियन संधियों की तुलना में हित्ती संधियों के अधिक निकट हैं।

तीसरा, शर्तों की विषय वस्तु असीरियन संधियों की तुलना में व्यापक है। असीरियन संधियों का संबंध केवल उत्तराधिकार से है। सेफ़ायर संधियों का दायरा बहुत व्यापक है, और इस अर्थ में वे हित्ती संधियों के बहुत करीब हैं।

फिर चौथे, फिट्ज़मेयर ने सेफ़ायर संधियों की अपनी चर्चा में बताया कि कुछ शर्तों के निर्माण की शैली हित्ती संधि निर्माण की शर्तों के बहुत करीब है। बहुत घनिष्ठ पत्राचार है, अत: आप उसका भी उल्लेख कर सकते हैं।

यह मुझे "5" "निष्कर्ष" पर लाता है। मुझे लगता है कि हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सेफ़ायर की संधियाँ पहले की हित्ती संधियों के साथ कुछ समानताएँ प्रदर्शित करती हैं, लेकिन साथ ही, इसमें महत्वपूर्ण अंतर भी हैं। विशेष रूप से , ऐतिहासिक प्रस्तावना का अभाव, बुनियादी शर्तें और बुनियादी शर्तों की एकतरफा प्रकृति। तो ऐसा लगता है जैसे आपकी प्रगति हो रही है। आपके पास क्लासिक हित्ती रूप है, फिर आपको सेफ़ायर संधियाँ मिलती हैं, और फिर एसरहद्दोन असीरियन संधियाँ मिलती हैं। सेफ़ायर का असीरियन की तुलना में हित्ती रूप से अधिक संबंध है। आप कह सकते हैं कि संरचना और सामग्री के संदर्भ में सेफ़ायर संधियाँ कहीं बीच में हैं । कुछ समानताएं असीरियन संधियों से मिलती हैं, कुछ हित्ती संधियों से। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि संधि प्रपत्र के विकास के बारे में क्लाइन ने जो कहा है, वह सही है। सेफ़ायर और असीरियन संधियाँ भय पर अधिक आधारित प्रतीत होती हैं जबकि हित्ती विश्वास और वफादारी पर अधिक आधारित थीं। महान राजा ने उसके लिए जो अच्छे काम किए थे, उसके कारण जागीरदार के पास वफादारी के साथ जवाब देने का कारण था।

इनमें से बहुत से लोग यह कहकर क्लाइन के मॉडल की ताकत से बचने की कोशिश कर रहे हैं कि दोनों प्रकार की संधियों के बीच वास्तव में बहुत अधिक अंतर नहीं है। यदि आप उन्हें देखते हैं और उस संरचना को देखते हैं, तो क्लाइन का यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि क्लासिक हित्ती रूप और बाद के असीरियन या अरामी सेफ़ायर रूप के बीच वास्तविक अंतर है।

हमारे पास रामसेस द्वितीय और हित्ती शासक के बीच एक समता संधि है, और हमारे पास उसकी एक प्रति है। चूँकि मिस्र और हित्तियों के बीच संबंध थे, इसलिए मूसा को इस प्रकार के दस्तावेज़ों का अच्छी तरह से ज्ञान रहा होगा।

जो मुझे फिर "सी," "व्यवस्थाविवरण की तिथि के लिए संधि/संविदा सादृश्य के निहितार्थ" पर लाता है। मुझे ऐसा लगता है कि साक्ष्य इस निष्कर्ष को सही ठहराते हैं कि हित्ती संधियों को संधि के एक अनूठे प्रारंभिक रूप का प्रतिनिधित्व करने के लिए कहा जा सकता है जिसे बाद की संधियों में दोहराया नहीं गया है, चाहे वह एसरहद्दोन या सेफ़ायर की हो । हित्ती संधियों में परिलक्षित अलग भावना इसके साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, जो सुजरेन या महान राजा के प्रति जागीरदार की कृतज्ञता और सम्मान में निहित है। असीरियन संधियाँ एक अलग संरचना की हैं और उनकी भावना बिल्कुल अलग है। सेफायर संधियों में हित्ती संधियों के साथ कुछ समानताएं हैं, अश्शूरियों की तुलना में कहीं अधिक, लेकिन उनमें उस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रस्तावना और बुनियादी शर्त का भी अभाव है। इसलिए मुझे लगता है कि क्लाइन आधिपत्य संधियों के दस्तावेजी रूप के विकास के बारे में अच्छे कारण से बात करता है। वह स्वीकार करते हैं कि मतभेदों को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताया जाना चाहिए, कि यह वास्तव में एक प्रजाति है जो आपको पुराने नियम के समय में मिलती है। लेकिन वह एक स्पष्ट विकास पाता है। फिर वह कहते हैं, "व्यवस्थाविवरण संरचना और भावना में आठवीं और सातवीं शताब्दी में सेफ़ायर संधियों या असीरियन संधियों की तुलना में पिछली हित्ती संधियों से अधिक निकटता से मेल खाता है। " मुझे लगता है कि क्लाइन के निष्कर्ष में काफी योग्यता है और यह ध्यान देने योग्य है, विशेष रूप से इन आलोचनात्मक विद्वानों में से कुछ द्वारा प्राप्त की तुलना में अधिक।

क्लाइन ने *महान राजा की* अपनी संधि के पृष्ठ 43 पर निष्कर्ष निकाला है , “हालांकि पहले और बाद की संधियों के बीच मामले में पर्याप्त निरंतरता को पहचानना आवश्यक है, दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की हित्ती संधियों को क्लासिक रूप के रूप में अलग करना उचित है। बिना किसी संदेह के, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक इस दस्तावेजी विकास के क्लासिक चरण से संबंधित है। इसके बाद महान राजा की संधि के रूप में ड्यूटेरोनॉमी की *प्रथम दृष्टया मोज़ेक उत्पत्ति की पुष्टि होती है।* ख़ैर, यही उनकी थीसिस का सार है। मुझे लगता है कि वह अपने निष्कर्ष में आश्वस्त हैं।

अब, इससे थोड़ा आगे जाने के लिए, आप जे. थॉम्पसन को उनकी टिंडेल कमेंटरी में पढ़ रहे हैं। वह पृष्ठ 51 और 52 पर कहता है कि उसे क्लाइन के तर्क की ताकत के बारे में आपत्ति है। जैसे ही आप थॉम्पसन को पढ़ते हैं, आप पाएंगे कि वह 11 वीं और 10 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में व्यवस्थाविवरण की तारीख के लिए तर्क देता है, मोटे तौर पर डेविड और सोलोमन के शासनकाल के दौरान संयुक्त राजशाही के समय में। यह मोज़ेक के बाद का है, लेकिन राज्य के संदर्भ में प्रारंभिक है। वह पुस्तक के मूल के पीछे मूसा को देखते हैं, लेकिन उन्हें लगता है कि संपादकीय प्रक्रियाओं ने इसे वर्तमान स्वरूप में ला दिया है और यह मूसा के समय के बाद का है। दूसरे शब्दों में, वह क्लाइन की थीसिस को स्वीकार नहीं करता है कि यह फॉर्म ड्यूटेरोनॉमी की उत्पत्ति के लिए मोज़ेक तिथि का समर्थन करता है।

वह क्लाइन की थीसिस के संबंध में यह सुझाव देते हैं: "मूसा के दिनों के बहुत बाद लिखने वाले किसी व्यक्ति द्वारा व्यवस्थाविवरण को एक संधि के रूप में रखा गया था।" दूसरे शब्दों में, वह संधि/संविदा सादृश्य से इनकार नहीं करते, लेकिन कहते हैं कि इस प्रारूप को बाद में अपनाया जा सकता था। वहां उनका दृष्टिकोण आर. फ्रैंकेना के दृष्टिकोण से काफी मिलता-जुलता है । अपने "द वासल ट्रीटीज़ ऑफ़ एसरहड्डन एंड द डेटिंग ऑफ़ ड्यूटेरोनॉमी" में फ्रेंकेना असीरियन संधियों को देखता है और असीरियन संधियों पर हिब्रू निर्भरता के लिए तर्क देता है, विशेष रूप से ड्यूटेरोनॉमी के संबंध में अभिशाप फॉर्मूलेशन। वह कहते हैं, "इनका असीरियन संधियों के स्वरूप से गहरा संबंध है," इसलिए वह इन्हें अब इस समय से जोड़ रहे हैं।

जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, वेनफील्ड हिजकिय्याह और योशिय्याह के समय के दरबारी लेखकों के असीरियन संधि प्रपत्र से परिचित होने और इसे इज़राइल में लाने की बात करते हैं। तो उस तंत्र से, इसका उपयोग व्यवस्थाविवरण के साथ किया गया था। इसलिए थॉम्पसन टिप्पणी करते हैं कि, "इस संभावना को अनुमति दी जानी चाहिए कि व्यवस्थाविवरण को किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा एक प्राचीन संधि के रूप में प्रस्तुत किया गया था जिसने मूसा के दिनों के बहुत बाद लिखा था।" तो यह एक बात है जो वह कहते हैं।

एक और बात वह कहते हैं, "ऐतिहासिक प्रस्तावना का तर्क सही नहीं है क्योंकि असीरियन या अरामी संधियों में या तो एक प्रस्तावना मानी गई होगी, या इसे मौखिक रूप से कहा गया होगा।"

वह इस बात से इनकार नहीं करते कि यह अनुपस्थित है, लेकिन यह कहते हैं कि उन्होंने इसे मान लिया होगा या इसे मौखिक रूप से कहा होगा, और इसलिए यह पाठ में नहीं है। इसलिए आप इसकी ऐतिहासिक प्रस्तावना न होने को ज्यादा महत्व नहीं दे सकते। इसके अलावा, वह एक ऐतिहासिक प्रस्तावना के साथ सातवीं शताब्दी के संधि पाठ के साक्ष्य का दावा करता है। समस्या यह है कि यह एक विवादित पाठ है; यह एक बहुत ही खंडित और टूटा हुआ पाठ है, और हमने ऐसे लोगों को देखा है जिन्होंने इस बात पर विवाद किया है कि क्या कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना है या नहीं। लेकिन किसी भी मामले में, थॉम्पसन यह सुझाव देकर संधि प्रपत्र के विकास के मामले को कमजोर करने का प्रयास करता है कि ऐतिहासिक प्रस्तावना प्रारंभिक हित्ती संधियों की एक अनूठी विशेषता नहीं है। इसलिए उन्होंने निष्कर्ष निकाला, "इसलिए यह तथ्य कि ड्यूटेरोनॉमी का एक ऐतिहासिक परिचय है, आवश्यक रूप से दूसरी सहस्राब्दी की तारीख के लिए एक तर्क नहीं है, हालांकि यह हो सकता है," इसलिए वह वहां बचाव करते हैं।

मुझे लगता है कि मेरा समय लगभग ख़त्म हो गया है। मैं ज्यादा देर तक नहीं बोल सकता, लेकिन मैं थॉम्पसन के साथ बातचीत करना चाहता हूं, न केवल उन दो तर्कों पर, यानी ऐतिहासिक प्रस्तावना तर्क और यह विचार कि इसे बाद में किसी ने संधि के रूप में रखा था। मैं उस पर टिप्पणी करूंगा, और फिर कुछ अन्य तर्क, लेकिन हमें पूजा के केंद्रीकरण पर चर्चा करने से पहले अगले सप्ताह की शुरुआत में ऐसा करना होगा। मुझे लगता है कि थॉम्पसन के साथ बातचीत करना महत्वपूर्ण है क्योंकि थॉम्पसन की टिप्पणी इंटरवर्सिटी टिंडेल श्रृंखला में है, जो एक इंजील श्रृंखला है। हम उम्मीद कर सकते हैं कि थॉम्पसन मोज़ेक तिथि का समर्थन करेगा और क्लाइन के तर्क को स्वीकार करेगा, फिर भी वह ऐसा नहीं करता है।

एलेसियो ट्रैनचेल द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया